नवभारत
इंदौर, रविवार, 19 अक्टूबर 2025

हमारा जीवन और आध्यात्मिक ज्योतिष

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

हमारा जीवन और आध्यात्मिक ज्योतिष एक-दूसरे के पूरक हैं. जैसे हम अपने जीवन में भौतिक और मानसिक संतुलन प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं, वैसे ही आध्यात्मिक ज्योतिष हमें मार्गदर्शन करती है कि कर्म, साधना, ज्ञान और सेवा के माध्यम से हम अपने जीवन को संपूर्ण और सार्थक बना सकते हैं. यह विद्या हमारे लिए मार्गदर्शक बनती है, हमारे संकल्पों को स्थिर करती है और हमें आत्मिक शांति और मोक्ष की दिशा में अग्रसर करती है.

हमारा जीवन केवल भौतिक सुख-सुविधाओं और सांसारिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक गहन, बहुआयामी यात्रा है जिसमें हमारे कर्म, विचार, मानसिकता, भावनाएँ और आध्यात्मिक ऊर्जा आपस में जुड़े हुए हैं. जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल धन, स्वास्थ्य या प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं है, बल्कि आत्मा की उन्नति, मानसिक स्थिरता, ज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति है. इसी संदर्भ में, आध्यात्मिक ज्योतिष हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती है. यह विद्या न केवल भविष्यवाणी की तकनीक है, बल्कि हमारे कर्म, व्यक्तित्व, मानसिक और भावनात्मक स्वरूप और आध्यात्मिक विकास को समझने का विज्ञान भी है.

जन्मकुंडली हमारे जीवन की मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक संरचना का आधार है. इसमें ग्रहों और भावों की स्थिति यह दर्शाती है कि व्यक्ति के जीवन में कौन-सी प्रवृत्तियां प्रबल हैं, उसका मानसिक संतुलन कैसा है, उसकी भावनाएँ किस प्रकार नियंत्रित होती हैं और उसका आध्यात्मिक पथ किस दिशा में अग्रसर है. प्रत्येक ग्रह का प्रभाव व्यक्ति के स्वभाव, मानसिक प्रवृत्ति, भावनात्मक स्थिरता, सामाजिक व्यवहार और आध्यात्मिक विकास को प्रभावित करता है. सूर्य साहस, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को बढ़ाता है, जबकि चंद्रमा मानसिक और भावनात्मक पक्ष का प्रतीक है. मंगल साहस और शक्ति प्रदान करता है, बुध बुद्धि, संचार और ज्ञान को प्रभावित करता है, और शुक्र प्रेम, सौंदर्य तथा सृजनात्मकता की ऊर्जा देता है. बृहस्पति या गुरु ज्ञान, धार्मिकता और दानशीलता को बढ़ाता है, शनि संयम, तपस्या और कर्मों की गंभीर समझ विकसित करता है, और राहु तथा केतु व्यक्ति के जीवन में गहन अनुभव, मानसिक परीक्षण और आध्यात्मिक चेतना को उजागर करते हैं. जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति व्यक्ति के भौतिक जीवन, सामाजिक जीवन, मानसिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक यात्रा के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है.

नक्षत्र हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. ये न केवल जन्म का संकेत देते हैं, बल्कि हमारे मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्वरूप का प्रतिबिंब भी होते हैं. उदाहरण स्वरूप, रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति स्थिर, सहनशील और आध्यात्मिक दृष्टि से मजबूत होता है, जबकि अश्विनी, मृगशीर्ष और उत्तरा भाद्रपद जैसे नक्षत्र उत्साही, सृजनात्मक और आध्यात्मिक अनुभवों में गहन व्यक्ति बनाते हैं. नक्षत्रों का अध्ययन व्यक्ति को अपने स्वभाव, मानसिक प्रवृत्ति, कर्म पथ और आध्यात्मिक उन्नति को समझने में मदद करता है और उसे जीवन में सही दिशा निर्धारित करने की क्षमता प्रदान करता है. नक्षत्रों के आधार पर व्यक्ति यह जान सकता है कि उसकी मन:स्थिति, भावनात्मक स्थिरता और आध्यात्मिक साधना में किस प्रकार की प्रवृत्तियाँ प्रबल होंगी.

ग्रह दशा और गोचर हमारे जीवन में समय-समय पर होने वाले आध्यात्मिक, मानसिक और भावनात्मक परिवर्तनों का संकेत देते हैं. जब किसी व्यक्ति पर शनि या राहु की कठिन दशा आती है, तो उसे मानसिक संघर्ष, संयम और जीवन की गंभीर परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है. ये अनुभव व्यक्ति को आध्यात्मिक स्थिरता, धैर्य और मानसिक दृढ़ता प्रदान करते हैं. गुरु या बृहस्पति की दशा व्यक्ति को ज्ञान, धर्म और सत्कर्म के मार्ग पर अग्रसर करती है. दशा और गोचर केवल भौतिक जीवन की घटनाओं के लिए नहीं बल्कि व्यक्ति की आध्यात्मिक यात्रा और आत्मिक उन्नति के लिए भी मार्गदर्शक हैं. व्यक्ति यह समझ सकता है कि उसके जीवन में कौन-से समय पर कौन-सा प्रयास फलोंदायी होगा और कौन-से समय पर संयम और साधना की आवश्यकता होगी.

योग और भावों का अध्ययन भी आध्यात्मिक ज्योतिष में केंद्रीय स्थान रखता है. जन्मकुंडली में धन योग, ज्ञान योग, तप योग और मोक्ष योग हमारे भौतिक और आध्यात्मिक जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं. मोक्ष योग यह संकेत करता है कि व्यक्ति अपने कर्म, साधना और ज्ञान के माध्यम से आत्मिक मुक्ति और जीवन के अंतिम उद्देश्य तक पहुँच सकता है. योगों का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि व्यक्ति को किन क्षेत्रों में साधना, ध्यान और तपस्या की आवश्यकता है और किन क्षेत्रों में उसके प्रयास अधिक फलदायी होंगे. यह ज्ञान व्यक्ति को जीवन में स्थिरता और मानसिक संतुलन बनाए रखने की क्षमता प्रदान करता है.

कर्म और जन्मकुंडली के ग्रह प्रभाव का संबंध भी अत्यंत गहरा है. हमारे वर्तमान जीवन में हमारे पूर्वजन्मों के कर्मों का फल ग्रहों और दशाओं के रूप में प्रकट होता है. जैसे किसी के मंगल और शनि के कठिन योग जन्मकुंडली में हों, तो उसे जीवन में संघर्ष, मानसिक परीक्षण और कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है. ये अनुभव व्यक्ति को संयम, धैर्य और आध्यात्मिक स्थिरता की ओर ले जाते हैं. वहीं यदि गुरु और बृहस्पति के लाभ योग हों, तो व्यक्ति में धार्मिकता, ज्ञान और सत्कर्म की सहज प्रवृत्ति विकसित होती है. यही कारण है कि आध्यात्मिक ज्योतिष व्यक्ति को कर्मों और साधना के माध्यम से जीवन में संतुलन स्थापित करने की दिशा में मार्गदर्शन करती है.

आध्यात्मिक ज्योतिष में साधना, ध्यान, मंत्र, हवन और यज्ञ के उपाय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं. ग्रहों और दशाओं के अनुसार उपयुक्त उपाय करने से व्यक्ति जीवन में मानसिक स्थिरता, आत्मिक शक्ति और आध्यात्मिक विकास प्राप्त कर सकता है. उदाहरण स्वरूप, शनि की कठिन दशा में शनि मंत्र, शनि व्रत और हवन करना लाभकारी होता है. गुरु और बृहस्पति के प्रभाव को बढ़ाने के लिए गुरु मंत्र, ज्ञान साधना, दान और सेवा करना फायदेमंद होता है. सूर्य मंत्र और आदित्य हृदय स्तोत्र शक्ति, ऊर्जा और स्वास्थ्य प्रदान करते हैं, जबकि चंद्र मंत्र और स्तोत्र मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन को मजबूत करते हैं. इन उपायों के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है और मानसिक, भावनात्मक व आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनता है.

आध्यात्मिक ज्योतिष यह भी स्पष्ट करती है कि व्यक्ति के भौतिक सुख-दुख और आध्यात्मिक प्रगति का आपस में गहरा संबंध है. जब व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार जीवन जीता है, अपने धर्म और सामाजिक कर्तव्यों का पालन करता है और साधना, ध्यान तथा आध्यात्मिक अध्ययन में समय देता है, तो ग्रहों का प्रभाव सकारात्मक रूप से विकसित होता है. इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को मानसिक शांति, आत्मिक संतुलन और जीवन के उच्च उद्देश्य की प्राप्ति होती है.

दिवाली पर धन की देवी लक्ष्मी के साथ अलक्ष्मी का भी होता है उल्लेख

जानिए क्यों भगाई जाती हैं लक्ष्मी की बड़ी बहन

दीपावली पर हर घर में धन की देवी लक्ष्मी के स्वागत की परंपरा है. कार्तिक अमावस्या के प्रदोष काल में लक्ष्मी पूजा का विधान होता है, ताकि घर में सुख, समृद्धि और धन का स्थायी निवास हो. लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि लक्ष्मी की एक बड़ी बहन भी हैं-अलक्ष्मी. दिवाली के अवसर पर जहां मां लक्ष्मी को बुलाया जाता है, वहीं अलक्ष्मी को घर से दूर भगाने की परंपरा निभाई जाती है.

समुद्र मंथन से हुईं दोनों बहनों की उत्पत्ति- पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, लक्ष्मी और अलक्ष्मी दोनों का जन्म समुद्र मंथन से हुआ था. लक्ष्मी धन, सौभाग्य और समृद्धि की देवी मानी जाती हैं, जबकि अलक्ष्मी को दरिद्रता और कलह की प्रतीक बताया गया है. पद्मपुराण में वर्णन मिलता है कि लक्ष्मी से पहले अलक्ष्मी का प्रकट होना हुआ था. वे लाल वस्त्र धारण किए हुए थीं देवताओं से पूछा कि उनका निवास किस स्थान पर होगा.

जहां कलह और असत्य, वहीं करती हैं निवास-पद्मपुराण के अनुसार, देवताओं ने अलक्ष्मी को 'कलहप्रिया दरिद्रा देवी' कहा और उन्हें आदेश दिया कि वे उन्हीं घरों में निवास करें जहां झगड़े, कलह और असत्य का बोलबाला हो. जहां लोग कठोर वाणी बोलते हैं, स्त्रियों का अपमान करते हैं, सन्ध्या के समय सो जाते हैं या धार्मिक अनुशासन का पालन नहीं करते - वहां अलक्ष्मी का निवास होता है.

संदेश- धन, सुख और समृद्धि की प्राप्ति के लिए केवल पूजा ही नहीं, बल्कि घर और व्यवहार में सत्य, सौहार्द और पवित्रता बनाए रखना भी आवश्यक है, ताकि लक्ष्मी का स्थायी निवास हो और अलक्ष्मी का प्रवेश न हो.

दिवाली पर लक्ष्मी का आह्वान और अलक्ष्मी का निष्कासन

धार्मिक मान्यता है कि लक्ष्मी और अलक्ष्मी एक साथ नहीं रह सकतीं. जहां लक्ष्मी का निवास होता है, वहां शांति, सौभाग्य और सुख की वृद्धि होती है. वहीं जहां अलक्ष्मी का प्रभाव रहता है, वहां दरिद्रता और क्लेश का वास होता है. इसी कारण दीपावली पर लोग अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं, दीप जलाते हैं और लक्ष्मी पूजन कर अलक्ष्मी को दूर भगाते हैं.

पितरों का आशीर्वाद और लक्ष्मी कृपा के लिए करें यह काम

दिवाली की सुबह का विशेष विधान

पूरे देश में दीपावली (सोमवार, 20 अक्टूबर) की तैयारियां ज़ोरों पर हैं. कार्तिक अमावस्या को देवी लक्ष्मी और गणेश की पूजा की परंपरा सर्वविदित है, लेकिन स्कंदपुराण में इस दिन की शुरुआत को लेकर विशेष विधान बताए गए हैं. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, यदि दिवाली की सुबह इन नियमों का पालन किया जाए, तो पूरे दिन शुभता बनी रहती है और धन की देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है.

सुबह का नियम- पितरों को करें प्रणाम- पुराणों के अनुसार, दीपावली के दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान कर देवी-देवताओं की पूजा करना चाहिए. इसके साथ ही, इस दिन अपने पितरों (पूर्वजों) को प्रणाम करना अत्यंत आवश्यक माना गया है. इसका मुख्य कारण यह है कि अमावस्या तिथि सीधे पितरों को समर्पित होती है. जब भक्त सुबह पितरों को याद करते हैं, तो उनकी आत्माएं तृप्त होती हैं और उनका आशीर्वाद सीधे घर में प्रवेश करता है. ज्योतिषी बताते हैं कि सुबह की शुरुआत इस तरह करने से पूरा दिन शुभ रहता है. मान्यता है कि जहां पितरों का आशीर्वाद होता है, वहां नकारात्मक ऊर्जा टिक नहीं पाती और समृद्धि स्वयं आती है, क्योंकि देवी लक्ष्मी उसी घर में निवास करती हैं जहां सकारात्मक ऊर्जा और पूर्वजों का सम्मान होता है. इस दिन पितरों के नाम से दान-दक्षिणा (खासकर दूध, दही, घी आदि से पार्वण श्राद्ध) करना शुभ फलदायक होता है, जिससे पूर्वजों का आशीर्वाद मिलता है और परिवार पर उनकी कृपा पूरे वर्ष बनी रहती है.

शुभ मुहूर्त और तिथि का भ्रम

इस वर्ष दिवाली की तिथि को लेकर भ्रम की स्थिति है, क्योंकि अमावस्या तिथि 20 अक्टूबर को दोपहर 3.44 बजे शुरू होकर 21 अक्टूबर को शाम 5.44 बजे तक रहेगी. हालांकि, लक्ष्मी पूजा प्रदोष काल (शाम) में की जाती है, इसलिए अधिकांश स्थानों पर 20 अक्टूबर की रात को ही दिवाली मनाई जाएगी. पूजा का सबसे शुभ मुहूर्त 20 अक्टूबर को शाम 7.08 बजे से रात्रि 8.18 बजे तक रहेगा. भक्तों को सलाह दी जाती है कि वे तिथि के भ्रम को त्यागकर, प्रदोष काल के निर्धारित शुभ मुहूर्त में ही विधि-विधान से पूजा करें, ताकि उन्हें पूर्ण फल की प्राप्ति हो सके.

आर्थिक और संतान सुख के लिए सरल उपाय- स्कंदपुराण में इस दिन व्रत रखने और भगवान शिव का अभिषेक करने का भी ज़िक्र है. यह शिव की पूजा का एक दुर्लभ संयोग है जो दिवाली पर बनता है. आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे श्रद्धालुओं के लिए सरल उपाय बताया गया है- सुबह शिवलिंग पर कच्चे चावल अर्पित करें. चावल को अखंडित अक्षत और अन्नपूर्णा का स्वरूप माना जाता है. इसलिए यह विधान सीधे अन्न और धन की कमी को दूर करने से जुड़ा है, जिससे घर में कभी भोजन का अभाव नहीं होता. वहीं, संतान सुख की कामना के लिए गेहूं चढ़ाना शुभ माना जाता है. गेहूं बीज और वृद्धि का प्रतीक है. भक्त गेहूं अर्पित करके भगवान शिव से वंश वृद्धि और स्वस्थ संतति का वरदान मांगते हैं. ये दोनों उपाय न केवल विशिष्ट मनोकामनाओं के लिए हैं, बल्कि जीवन में स्थिरता और उन्नति लाने के लिए भी किए जाते हैं.

सुबह की इन पूजा विधियों के बाद, श्रद्धालु शाम को प्रदोष काल में मुख्य लक्ष्मी पूजा की तैयारी करें. प्रदोष काल (संध्या काल) दिन और रात के मिलन का समय होता है, जिसे देवी-देवताओं के आगमन का सर्वाधिक शुभ मुहूर्त माना गया है.

मान्यता है कि इस काल में लक्ष्मी का पूजन करने से उनकी चंचलता समाप्त होती है और वे स्थायी रूप से घर में वास करती हैं. शाम की पूजा के लिए माता लक्ष्मी के लिए कमल के फूलों की शय्या बनाना अत्यंत शुभ होता है. कमल (पद्म) लक्ष्मी को अत्यंत प्रिय है और यह आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है, इसलिए उनके लिए यह आसन तैयार करने से पूजा का फल कई गुना बढ़ जाता है.

घर की सफाई में इन वस्तुओं को जरूर करें बाहर

वरना रुक सकती है लक्ष्मी कृपा

सफाई के दौरान कुछ ऐसी चीजें अनदेखी रह जाती हैं जो अशुभ मानी जाती हैं और लक्ष्मी कृपा में बाधा बन सकती हैं. यदि इन्हें समय रहते घर से बाहर न किया जाए तो घर की बरकत और सुख-शांति प्रभावित हो सकती है.

दिवाली का पर्व केवल रोशनी और सजावट का नहीं, बल्कि नकारात्मकता को दूर कर सकारात्मक ऊर्जा का स्वागत करने का प्रतीक भी है. ऐसा माना जाता है कि मां लक्ष्मी उसी घर में प्रवेश करती हैं, जहां स्वच्छता, सुव्यवस्था और शुभता होती है. इसलिए दिवाली की तैयारी में सजावट से पहले घर की गहराई से सफाई करना बेहद आवश्यक है.

वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार, कई बार सफाई के दौरान कुछ ऐसी चीजें अनदेखी रह जाती हैं जो अशुभ मानी जाती हैं और लक्ष्मी कृपा में बाधा बन सकती हैं. यदि इन्हें समय रहते घर से बाहर न किया जाए तो घर की बरकत और सुख-शांति प्रभावित हो सकती है.

टूटे-फूटे बर्तन और कांच का सामान

वास्तु के अनुसार, घर में टूटे बर्तन, ग्लास या कांच के सामान को रखना दरिद्रता और नकारात्मक ऊर्जा का संकेत है. ये न केवल घर की सुंदरता घटाते हैं बल्कि आर्थिक स्थिरता पर भी असर डालते हैं. दिवाली की सफाई के दौरान ऐसे सभी सामान को तुरंत हटा देना चाहिए.

टूटा हुआ पलंग

टूटा या डगमगाता पलंग घर में अशांति और तनाव का कारण माना जाता है. कहा जाता है कि यह पति-पत्नी के संबंधों में मतभेद और मनमुटाव लाता है. इसलिए दिवाली से पहले ऐसे फर्नीचर को बदलना शुभ माना गया है.

खराब घड़ी

घड़ी समय और गति का प्रतीक है. घर में बंद या खराब घड़ी रखना जीवन में रुकावट और दुर्भाग्य को दर्शाता है. दिवाली की सफाई के दौरान इन घड़ियों को घर से हटाकर नई घड़ी लगाना शुभ माना जाता है.

टूटे और बेकार सामान

पुराने खिलौने, फटी चादरें, बेकार डिब्बे और टूटी सजावटी वस्तुएं घर में नकारात्मक ऊर्जा बढ़ाती हैं. ये वस्तुएं न केवल अव्यवस्था पैदा करती हैं बल्कि मां लक्ष्मी के प्रवेश में बाधा बनती हैं.

फटे या पुराने जूते-चप्पल

पुराने जूते-चप्पल घर में रखना आर्थिक तंगी और बाधाओं का कारण माना गया है. दिवाली की तैयारी में इन्हें बाहर निकाल देना चाहिए ताकि घर में समृद्धि बनी रहे.

दिवाली सिर्फ दीप जलाने का पर्व नहीं, बल्कि जीवन में नई शुरुआत का अवसर है. यदि इस अवसर पर घर से बेकार और नकारात्मक वस्तुओं को हटा दिया जाए, तो घर में न केवल स्वच्छता और सौंदर्य बढ़ता है, बल्कि सुख, शांति और समृद्धि भी स्थायी रूप से बनी रहती है.

पुरानी झाड़ू

झाड़ू को लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है, लेकिन पुरानी या टूटी झाड़ू घर में रखना अशुभ होता है. यह आर्थिक परेशानी का संकेत देती है. दिवाली पर नई झाड़ू लाना और पुराने को बाहर करना शुभ माना गया है.

पुराने अखबार और रद्दी कागज

घर में जमा पुराने अखबार, कागज और रद्दी न केवल जगह घेरते हैं बल्कि नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाते हैं. वास्तु शास्त्र के अनुसार, मां लक्ष्मी केवल साफ-सुथरे और व्यवस्थित घर में ही निवास करती हैं.

राशिफल

दिनांक- 19 से 25 अक्टूबर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य तुला राशि में, मंगल तुला राशि में, बुध तुला राशि में, गुरू मिथुन राशि में ता. 19 को 5/36 रातअंत से कर्क राशि में, शुक्र कन्या राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा कन्या तुला और वृश्चिक राशि में संचरण करेगा..

ग्रहयोगों का प्रभाव:- ता. 24 वृश्चिके बुध के प्रभाव से गेहू, जौ, चना, अलसी, सोना, चांदी, लाल चंदन, मजीठ, श्रीफल, सुपाड़ी, कपास, शेयर बाजार आदि में तेजी का लाभ मिलेगा, अफीम में पहले तेजी बाद में मंदी होगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	19 अक्टूबर को	शिव चतुर्दशी व्रत, नरक चतुर्दशी (चन्द्रोदय व्यापिनी), श्रीहनुमान जन्म
सोमवार	20 अक्टूबर को	दीपावली, लक्ष्मी कुबेर पूजन
मंगलवार	21 अक्टूबर को	केदार गौरी व्रत (द.भा.), स्नानदान श्राद्ध अमावस्या
बुधवार	22 अक्टूबर को	अन्नकूट गोवर्धन पूजा, बलि प्रतिपदा
गुरूवार	23 अक्टूबर को	चन्द्रदर्शन, चित्रगुप्त पूजा, भाई दोज, यम द्वितीया
शनिवार	25 अक्टूबर को	विनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, दुर्वागणपति व्रत, सूर्य षष्ठी व्रतारंभ

मेष

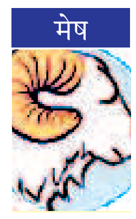

पहिले से चले आ रहे कार्य जारी रहेंगे, नये कार्यो में हाथ न डालें, लंबे समय से जिस सफलता की उम्मीद कर रहे हैं, वह मिलेगी, कार्यक्षेत्र में आपको विरोधियों का सामना करना पड़ेगा. जोड़ों का दर्द, बुखार आदि से परेशानी हो सकती है, पारिवारिक कार्यो में सफलता मिलेगी. भावनात्मक संबंधों में निकटता आयेगी, प्रापर्टी से अच्छा लाभ मिलेगा.

वृषभ

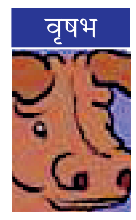

कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आगे आपकी मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यो को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हानिप्रद हो सकता है, घरेलू माहौल खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च सामने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सत्संग में रूचि बढ़ेगी.

मिथुन

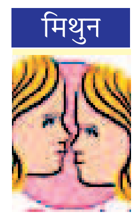

यदि आप अस्वस्थ्य और कमजोर हैं, तो स्वास्थ्य में सुधार होगा, नये पार्टनरशिप के साथ कार्य के लिये समय अनुकूल है, अपने कार्य की क्षमता को पहचानकर कार्य करें, घरेलू मामलों के लिये सप्ताह अच्छा है, माता पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.सप्ताह के उत्तरार्ध में भाग्य साथ देगा, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको अत्याधिक खर्च और परिश्रम करना पड़ेगा

कर्क

आपके अधिकारी व शुभचिन्तक धन कमाने में आपकी सहायता करेंगे, व्यापार से जुड़े लोग बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं, घरेलू आयोजन आनन्ददायक रहेगा, आप अपने से जुड़े लोगों के साथ संवाद बनाये रखें, सकारात्मक दृष्टिकोण आपको सफलता दिलायेगा, कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, आमदानी में वृद्धि होगी, जीवनसाथी की अपेक्षायें बढ़ेंगी.

सिंह

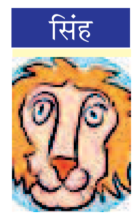

अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों के कारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरूआत ठीक रहेगी, पुरानी गलती को सुधारकर आगे बढ़ें, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करेंगे, सप्ताह में आपको अपने प्रयासों में अच्छी सफलता मिलेगी.

कन्या

इस सप्ताह सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे, अपने घर में आप निर्माण संबंधी कोई सुधार कर सकते हैं, पुराना घर बेचकर नया घर खरीदने पर विचार होगा. अविवाहितों को मनचाहा जीवनसाथी मिल सकता है, धार्मिक यात्रा होगी, छात्रों को कई मुश्किलों का सामना हो सकता है, व्यवसायिक वर्ग को नये अनुबंधों में शामिल होने के पहले गंभीरता से विचार करना चाहिये.

तुला

इच्छित सफलता के लिये कार्य योजना में बदलाव संभव है, प्रापर्टी के कारोबार में अच्छा लाभ मिलेगा, व्यापारी आयात निर्यात के बारोबार की शुरूआत कर सकते हैं, आप अतिरिक्त जिम्मेदारी को आसानी से निभा लेंगे, सप्ताह के शुरूआत में आप भ्रमण की स्थिति में रहेंगे, परन्तु धीरे धीरे आप नये आयामों की ओर बढ़ेंगे. वित्तीय स्थिति से संतुष्ट रहेंगे.

वृश्चिक

अपने आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानबाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफिस में आपके खुले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा, अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, शेयर में धन निवेश से परहेज करें, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अनदेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

धनु

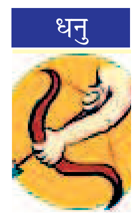

आप अपने लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहेंगे, घर के सदस्यों के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा. आस पड़ौस या रिश्तेदारों के साथ संबंध सुधरेंगे, सप्ताह में व्यवसाय व्यापार के विस्तार की संभावना बनती है, सप्ताह के उत्तरार्ध में भाग्य साथ देगा, मेल मुलाकात उपयोगी रहेगी, अधिनस्थ आपका सहयोग करेंगे.

मकर

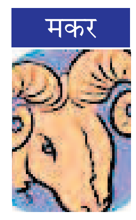

कार्य क्षेत्र में आपको प्रतिभा दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा. आपको उत्तराधिकार का अवसर मिल सकता है, उदारता पर अंकुश रखे तो राहत मिलेगी. छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, सप्ताह में किसी रिश्तेदार से सुखद समाचार मिलेगा कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी.

कुम्भ

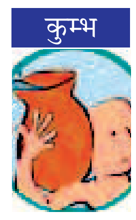

परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफलता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फ धन कमाने का साधन ही नहीं समझें, बल्कि प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे,परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे.

मीन

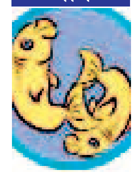

परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफलता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फ धन कमाने का साधन ही नहीं समझें, बल्कि प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे,परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे.